विनोबा भावे विश्वविद्यालय

हजारीबाग (झारखण्ड)

पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) – 2020

स्नातक हिंदी (FYUGP)

रूचि आधारित साख पद्धति

(CBCS)

पाठ्यक्रम के विषय में

सा विद्या या विमुक्तये

– **विष्णुपुराण**

झड़ गए पंख, विषदंत झड़े,
पशुता का झड़ना बाकी है ।
ऊपर–ऊपर तन संवर गये,
मन का संवरना बाकी है ।

– **दिनकर**

प्रस्तुत पाठ्यक्रम प्राचीन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार किया गया है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करना वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य है। इसी को ध्यान में रखकर एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

भाषा का प्रयोग दो रूपों में किया जाता है – बोलचाल तथा लिखित रूप में । बोलचाल की भाषा का मतलब दैनिक प्रयोग की भाषा से है । इसमें व्यक्तिगत रचनात्मकता का अभाव होता है । यह सामाजिक रचनात्मकता द्वारा निर्मित होती है । इस कारण इसमें सामाजिक–सांस्कृतिक रिश्तों की प्रगाढता होती है । लिखित भाषा, बोल–चाल की भाषा से थोड़ी भिन्न होती है । मौखिक भाषा जब लिखित रूप में प्रयुक्त होती है तब गंभीर हो जाती है, विषय के अनुरूप उसमे परिवर्तन हो जाता है ।

लिखित भाषा का प्रयोग केवल साहित्य के लिए ही नहीं होता । कार्यालय, शास्त्र, विज्ञान, कला, संचार आदि के लिए भी इसका प्रयोग अपेक्षित है । कार्यालय, विज्ञान, शास्त्र, संचार आदि की भाषा से साहित्य की भाषा भिन्न होती है । साहित्येतर विषयों की भाषा ज्यादा वैचारिक, विश्लेषणात्मक तथा सूचनात्मक होती है । इसमें मानवीय संवेदना, मानवीय मूल्यों की दरकार नहीं होती, किन्तु साहित्यिक भाषा में मानवीय संवेदना, मानवीय मूल्यों के साथ–साथ ज्ञान का विशाल भंडार होता है । वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रधान शिक्षा के इस युग में जहाँ मानवीय संवेदनाएँ मरती जा रही है, मानव मूल्य विनष्ट होते जा रहे हैं, वहीं बोलचाल की हिंदी और साहित्य की भाषा हिंदी अपने हजार–हजार हाथों से विश्व मानव मूल्यों के टूटन को, मरती हुई संवेदना को रोक रखती है, तथा मानव के सर्वांगीण विकास में अहम् भूमिका निभाती है ।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के निर्देशानुसार विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड की हिंदी पाठ्यक्रम समिति ने **NEP–2020** को रूचि केन्द्रित सेमेस्टर पद्धति पर आधारित चार वर्षीय स्नातक कक्षाओं के लिए अपने पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय आत्मा की धरोहर, मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं से परिपूर्ण ऐसी ही हिंदी भाषा एवं साहित्य के महत्वपूर्ण संदर्भों एवं हिस्सों को निर्धारित किया है ।

स्नातक पाठ्यक्रम के विभिन्न सेमेस्टरों के लिए एक ओर जहाँ हिंदी साहित्य के इतिहास का आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के विभिन्न खंडों को रखा गया है, वहीं उस काल खंड के महान कवियों, लेखकों एवं उनके महत्त्वपूर्ण कृतियों को भी स्थान दिया गया है । परिचयात्मक पाठ्यक्रम (INTRODUCTORY), आधुनिक भारतीय भाषा (अनिवार्य) हिंदी (MIL), अहिंदी (NON-HINDI) तथा संप्रेषण कौशल (COMMUNICATION SKILLS) के पाठ्यक्रम में भी हिंदी साहित्य की महान विभूतियों की विविध विधाओं की महत्वपूर्ण रचनाओं को रखा गया है । संप्रेषण कौशल से सम्बद्ध पाठ्यक्रम में निबंध, भाषा, व्याकरण, पत्रकारिता के भी कुछ हिस्सों को अनिवार्य बनाया गया है ।

प्रत्येक भाषा–साहित्य एवं देश का अपना इतिहास होता है । यह अनेक कालखंडों में विभाजित होता है । प्रत्येक कालखंड की अलग–अलग, अपनी–अपनी परिस्थितियां होती है । राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, आंतरिक एवं बाह्य परिवेश होते हैं । इतिहास का अध्ययन इन्हीं प्राचीन भाषा, साहित्य, सभ्यता, संस्कृति आदि को जानने के लिए आवश्यक होता है, वहीं सृजनात्मक साहित्य मानवमूल्यों में अभिवृद्धि कर व्यक्ति को संवेदनशील बनाकर, उसमें भाषिक दक्षता प्रदान करता है, सौन्दर्यबोध उत्पन्न करता है तथा देश की कामकाजी व्यवस्था के अनुकूल बनाता है । हिंदी आज न सिर्फ राष्ट्रीय गुणवत्ता और संस्कार–संस्कृति की भाषा है वरन विश्वग्राम की एक महती रोजगारोन्मुख भाषा है जिसे जानने, समझने और अपनाने वालों की संख्या वैश्विक स्तर पर अव्वल है ।

हिंदी पाठ्यक्रम समिति,

विनोबा भावे विश्वविद्यालय,

हजारीबाग (झारखण्ड)

प्रश्न–पत्र चयन के सामान्य निर्देश/अंक विभाजन

क्रेडिट – 03,नन हिन्दी,कुल अंक–50

1. प्रश्न पत्र की अवधि दो घंटे की होगी ।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे ।
3. दिए गए खंड 'क' से पांच वस्तुनिष्ठ एवं दो लघु उत्तरीय प्रश्न होंगे जिनका उत्तर देना अनिवार्य है।
4. दिए गए खंड 'ख' से दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं ।

खंड क (वस्तुनिष्ठ) –	02 X 05 = 10 अंक
खंड क (लघु उत्तरीय) –	05 X 02 = 10 अंक
खंड ख –	10 X 02 = 20 अंक
	40 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – एक लिखित परीक्षा एक मौखिक परीक्षा	05 अंक
उपस्थिति –	05 अंक
कुल	50 अंक

विशेष :– विभागीय शिक्षकों के अतिरिक्त मौखिकी हेतु एक वाह्य परीक्षक की उपस्थिति अनिवार्य होगी ।

क्रेडिट – 06 कुल अंक–100

1. प्रश्न पत्र की अवधि तीन घंटे की होगी ।
2. प्रश्न पत्र के दो खंड होंगे – क्रमशः लघूत्तरीय, वस्तुनिष्ठ एवं दीर्घउत्तरीय, प्रकार के होंगे ।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से जुड़ा खंड 'क' अनिवार्य होगा ।
4. दिये गये खंड क से दो लघूत्तरीय प्रश्न के उत्तर अपेक्षित हैं ।
5. दिये गये खंड 'ख' से चार प्रश्न के उत्तर अपेक्षित हैं ।

खंड क –	01 X 05 = 05 अंक
खंड क –	05 X 02 = 10 अंक
खंड ख –	15 X 04 = 60 अंक
	75 अंक
आतंरिक मूल्यांकन – एक लिखित परीक्षा एक मौखिक परीक्षा	15 अंक
सतत मूल्यांकन सह उपस्थिति –	10 अंक
कुल –	100 अंक

विशेष :– विभागीय शिक्षकों के अतिरिक्त मौखिकी हेतु एक वाह्य परीक्षक की उपस्थिति अनिवार्य होगी ।

प्रथम समसत्र (First Semester)

एम.आई.एल. (MIL) : सम्प्रेषण कौशल (Communication Skills)

कोड – **CC** – 1 अंक – 100 (वाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 06 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी ।
- व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे ।
- विद्यार्थी लेखन कला सीख सकेंगे ।

प्रस्तावित संरचना –

इकाई 1 - लेखन कौशल–लेखन–अर्थ, विशेषताएं, महत्व एवं प्रकार, मीडिया लेखन (समाचार, सम्पादकीय, फीचर, संपादक के नाम पत्र आदि), संवाद लेखन, जीवन वृत्त (बायोडाटा) – 02 क्रेडिट

इकाई 2 - टिप्पण, प्रारूपण, प्रतिवेदन, ज्ञापन, अनुवाद, संक्षेपण, पल्लवन – 02 क्रेडिट

इकाई 3 - कारक, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय – 01 क्रेडिट

इकाई 4 - लिंग निर्णय, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द, अनेक शब्दों के बदले एक शब्द – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ

- प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध परिदृश्य – पवन अग्रवाल, अलका प्रकाशन, कानपुर
- हिंदी प्रयोग – रामचंद्र वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- अच्छी हिंदी – जगदीश प्रसाद कौशिक, साहित्यागार, जयपुर
- हिंदी व्याकरण – बासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना
- संचार माध्यम लेखन – गौरीशंकर रैणा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

विषय कोड –

अंक – 50 (वाह्य – 40, आंतरिक – 10)

क्रेडिट – 03

समय – 02 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में औपचारिक, अनौपचारिक विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी ।
- व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे ।
- विद्यार्थी पत्र के माध्यम से लेखन कला सीख सकेंगे ।

प्रस्तावित संरचना –

इकाई 1 – पत्र–लेखन (औपचारिक,अनौपचारिक), ज्ञापन – 01 क्रेडिट

इकाई 2 – निबंध, पल्लवन – 01 क्रेडिट

इकाई 3 – कारक, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय – 01 क्रेडिट

सहायक ग्रंथ

- हिंदी व्याकरण – उमेश चंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- सरल हिंदी व्याकरण – वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन, पटना

परिचयात्मक पाठ्यक्रम (INTRODUCTORY) 01 : लेखन–कौशल

कोड – IRC - 01 अंक – 100 (वाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 03 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगत परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थियों में भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित हो सकेगी ।
- व्याकरण की दृष्टि से वे सही वाक्य लिख सकेंगे ।
- विद्यार्थी लेखन कला सीख सकेंगे ।
- छात्र कार्यालयी हिंदी के स्वरूप से परिचित होकर कार्यालय में हिंदी के प्रयोग में सक्षम हो सकेंगे ।
- ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान उनके हिंदी कौशल संवर्धन में सहायक होगा ।

प्रस्तावित संरचना

- लेखन कौशल का महत्व
- लेखन के विविध रूप
- लेखन प्रशिक्षण
- लेखन कौशल के विकास के लिए क्रियाकलाप
- कार्यालयी हिंदी का स्वरूप
- कार्यालयी हिंदी का क्षेत्र
- कार्यालयी पत्राचार के विविध रूप
- कार्यालयी हिंदी की समस्याएँ
- कार्यालयी हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली

सहायक ग्रंथ

- रचनात्मक लेखन, रमेश गौतम
- हिंदी वाक्य विन्यास, सुधा कश्यप
- संचार भाषा हिंदी, सूर्यप्रसाद दीक्षित
- प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिंदी – कृष्ण कुमार गोस्वामी
- प्रयोजनमूलक हिंदी – माधव सोनटक्के
- प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका – कैलाशनाथ पाण्डेय
- प्रशासनिक हिंदी – डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रमुख (MAJOR) प्रथम–पत्र – 01. हिंदी साहित्य : आदिकाल से पूर्व मध्यकाल – रचनाएँ व इतिहास

कोड – MJ - 1 अंक – 100 (वाह्य – 75, आंतरिक – 25)

क्रेडिट – 06 समय – 03 घंटे

पाठ्यक्रम के इस भाग का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा –

- विद्यार्थी 11वीं शताब्दी से लेकर मध्यकाल के पूर्वार्द्ध तक के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक संदर्भों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
- हिंदी साहित्य के प्रारंभिक और विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे ।
- हिंदी साहित्य के साहित्यकारों और उनकी रचनाओं के बारे में जान सकेंगे ।
- हिंदी के भावगत, भाषागत और शैलीगत विकास से परिचित हो सकेंगे ।

प्रस्तावित संरचना –

- हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन।
- आदिकाल का नामकरण।
- आदिकालीन परिस्थितियाँ ।
- रासो काव्य परंपरा।
- जैन साहित्य,नाथ साहित्य ।
- भक्ति काव्य और उसका वर्गीकरण।
- निर्गुण भक्ति काव्य का स्वरूप।
- प्रेमाख्यानक काव्य की प्रवृतियाँ ।
- सगुण भक्ति काव्य की प्रवृतियाँ।
- निर्गुण भक्ति काव्य की भाषा का स्वरूप।

कवि परिचय एवं रचनाएं–

पृथ्वीराज रासो –'कनवज्ज समय' के अंतर्गत षडऋतु वर्णन, विद्यापति–वंदना,राधा की वंदना, कबीरदास–साखी, रैदास–प्रभु जी तुम चंदन, नानक देव–जो नर दुख में दुख नहीं मानै, सुन्दरदास–कौन कुबुद्धि,गेह तज्यो,काहू सो,बोलिये तौ,तुक भंग छंद, तुलसीदास–कवितावली के पद, मीराबाई–मीरा के पद, सूरदास–भ्रमरगीत–सार

सहायक ग्रंथ –

- मध्यकालीन काव्य चिंतन और संवेदना, डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय।
- कबीर की विचारधारा, डॉ. गोविंद त्रिगुणायत।
- विद्यापति, डॉ. शिवप्रसाद सिंह।
- कबीर साहित्य की परख, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी।
- जायसी, डॉ. विजयदेव नारायण साही।
- सूर और उनका साहित्य, डॉ. हरवंशलाल शर्मा।
- मध्यकालीन काव्य वैभव, डॉ. शीतला प्रसाद दुबे।
- तुलसी काव्य मीमांसा, डॉ. उदयभानु सिंह।
- कबीर का रहस्यवाद, डॉ. राजकुमार वर्मा।
- तुलसी और उनका युग, डॉ. राजपति दीक्षित।
- हिन्दी विभा, डॉ. कृष्ण कुमार गुप्ता।